✍ निबंध लेखन प्रतियोगिता✍
👩🏻‍🏫 *विषय: पाठशाला*👨🏻‍🏫*

" _संस्कार बिना सुविधाएं पतन का_ _कारण होती है।_ "_ उपयुक्त कथन सर्वत: रूप से उचित है।
वर्तमान समय को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति आधुनिकता की होड़ में आगे बढ़ना चाहता है। इस विज्ञान के युग में हमारे संस्कार कहीं ना कहीं पीछे छूट गए हैं, इस दौर में हम सभी को अपने संस्कारों को कदापि नहीं भूलना चाहिए। परंतु यह सिर्फ घर पर संभव नहीं है।

**पाठशाला का उद्देश्य:*
हमें आज आवश्यकता है कि हम अपने बालों को सुबालक बनाने एवं संस्कारित बनाने हेतु उन्हें पाठशाला भेजें। पाठशाला का उद्देश्य हमारे लिए ऐसा होना चाहिए कि विद्यार्थियों को ना केवल वहां से ज्ञान की प्राप्ति हो बल्कि वे हमारी संस्कृति, रीति-रिवाजों का भी उन्हें पूर्णता ज्ञान हो। वहां पर बच्चे आए तो जिज्ञासा से परंतु जाएं समाधान के साथ। वस्तुतः पहले बच्चे गुरुकुल में पढ़ा करते थे अर्धविराम वहां पर शिक्षक गण सुचारू रूप से संस्कार देने में सफल होते थे परंतु आधुनिक युग में विद्यार्थी सामान्य विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करते हैं जो विद्यालय उन्हें लौकिक शिक्षा का ज्ञान तो उचित रूप से देते हैं परंतु उन्हें संस्कारों से अवगत नहीं करा पाते। और उसी उद्देश्य को पूरा करने हेतु पाठशाला की बहुत अहमियत है।

पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएं :
पाठशालाओं के शिक्षक गण की बात की जाए तो भी ऐसे शांत सरोवर की भांति होने चाहिए जिससे वे अपने निश्चल प्रेम में सारे विद्यार्थियों को अपने ज्ञान के सरोवर में अभिभूत कर ले। बच्चों को पाठशाला की शिक्षक में एक आदर्श शिक्षक की छवि प्रतीत होनी चाहिए। विद्यार्थी को अपनी शंका पूछने हेतु रंच मात्र भी संकोच नहीं होना चाहिए। उनका स्वभाव शांत, चरित्र निर्मल एवं आचरण शुद्ध होना चाहिए जिससे बच्चे उन्हें अपना आदर्श मानकर उन्हें अपनी प्रेरणा माने।

वर्तमान समय अनुसार बच्चों को किस पद्धति से* *पढ़ाया जाए : आधुनिक समय अनुसार आवश्यकता है कि बच्चों को पाठशाला जाने प्रेरित करने हेतु उन्हें उसी पद्धति से पढ़ाया जाए जिससे उनकी रुचि लगी रहे और उन्हें किसी भी प्रकार की उक्ताहट ना हो। और ऐसा संभव तभी हो पाएगा जब हम बच्चों की रुचि अनुसार विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाए। रोचक खेल खेलें जिन में धार्मिक शिक्षा की भी प्राप्ति हो। ऐसे खेलों के माध्यम से ना केवल इस उद्देश्य को प्राप्त करना मुमकिन है बल्कि बच्चों में उत्साहपूर्वक ज्ञान बढ़ाया जा सकता है। ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं जिसमें प्रत्येक की धार्मिक ज्ञान की वृद्धि हो और उनका उत्साहवर्धन भी होता रहे; ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन पाठशाला को सुचारू रूप से चलाने के लिए बहुत आवश्यक है। सबसे अहम सुझाव है कि आज हमें विद्यार्थियों को प्रत्येक विषय पर तर्क सिद्ध करने हेतु आज के समय अनुसार उदाहरण देकर समझाना चाहिए। यदि संभव हो सके तो प्रोजेक्टर के माध्यम से पढ़ाना भी सर्वोत्कृष्ट है। क्योंकि बच्चों को किसी भी विषय पर चित्रांकन रूप से बहुत अच्छी तरह समझ में आता है। और कम से कम हमें बच्चों को हफ्ते में 3 दिन छोटे-छोटे उपहार देने चाहिए जिससे उनका उत्साह बना रहे और वे पाठशाला में नित्य आए । इन कुछ सुझावों से हम अवश्य ही पाठशाला को सुचारू रूप से संचालित करने में सफल होंगे ।

अतः मैं अपने वाक्यों को विराम देना चाहूंगी यह कहकर कि अपने बच्चों को कार नहीं संस्कार दीजिए। और उन्हें " _डिस्को नहीं पाठशाला भेजिए" क्योंकि_ _"पाठशाला ही वह माध्यम है जिससे व्यक्ति पाषाण से परमात्मा बनने की प्रक्रिया में आगे बढ़ता है।"_
सधन्यवाद

लेखक:
दिया बड़कुल
पिता का नाम:
श्रीमान दीपक बड़कुल
उम्र:
16 वर्ष
पता :
एचडीएफसी बैंक के पीछे परकोटा वार्ड, सागर ,मध्य प्रदेश
मोबाइल नंबर:
8435648319